धत्तानन्द छन्द

जय चन्दजिनंदा, आनंदकंदा, भवभय भंजन राजे हैं।
रागादिकद्वन्दा, हरि सब फंदा, मुकुति मांहि थिति साजैं हैं।।१९।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द चौबोला

आठों दरब मिलाय गाय गुण, जो भविजन जिनचंद जजैं।
ताके भव भवके अघ भाजैं, मुक्तिसार सुख ताहि सजैं।।२०।।

जमके त्रास मिटैं सब ताके, सकल अमंगल दूर भजैं।
'वृन्दावन' ऐसो लखि पूजत, जातै शिवपुरि राज रजैं।।२१।।

इत्याशीर्वादः।(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

श्री चन्द्रप्रभु चालीसा

वीतराग सर्वज्ञ जिन, जिन वाणी को ध्याय।
लिखने का साहस करूं, चालीसा सिर नाय।।
देहरे के श्री चन्द्र को, पूजों मन वच काय।
ऋद्धि सिद्धि मंगल करें, विघ्न दूर हो जाय।।

जय श्री चन्द्र दया के सागर, देहरे वाले ज्ञान उजागर।
शांति छवि मूरति अति प्यारी, वेष दिगम्बर धारा भारी।।
नासा पर हैं दृष्टि तुम्हारी, मोहिनी मूरति कितनी प्यारी।
देवों के तुम देव कहावों, कष्ट भक्त के दूर हटावो।।

समन्तभद्र मुनिवर ने ध्याया, पिंडी फटी दर्श तुम पाया।
तुम जग में सर्वज्ञ कहावो, अष्टम तीर्थंकर कहलावो।।
महासेन के राजदुलारे, मात सुलक्षणा के हो प्यारे।
चन्द्रपुरी नगरी अति नामी, जन्म लिया चन्द्रप्रभु स्वामी।।

पौष बदी ग्यारस को जन्में नर नारी हरषे तब मन में।
काम क्रोध तृष्णा दुखकारी, त्याग सुखद मुनि दीक्षा धारी।।
फाल्गुन बदी सप्तमी भाई, केवल ज्ञान हुआ सुखदाई।
फिर सम्मेद शिखर पर जाके, मोक्ष गए प्रभु आप वहां से।।

लोभ मोह और छोड़ी माया, तुमने मान कषाय नसाया।
रागी नहीं, नहीं तू द्वेषी, वीतराग तू हित उपदेशी।।
पंचम काल महा दुखदाई, धर्म कर्म भूले सब भाई।
अलवर प्रान्त में नगर तिजारा, होय जहां पर दर्शन प्यारा।।

उत्तर दिशि में देहरा माहीं, वहां आकर प्रभुता प्रगटाई।
सावन सुदी दशमी शुभ नामी आन पधारे त्रिभुवन स्वामी।।
चिन्ह चन्द्र का लख नर नारी, चन्द्रप्रभु की मूरत मानी।
मूर्ति आपकी अति उजियाली, लगता हीरा भी हैं जाली।।

अतिशय चन्द्र प्रभू का भारी, सुनकर आते यात्री भारी।
फाल्गुन सुदी सप्तमी प्यारी, जुड़ता हैं मेला यहाँ भारी।।
कहलाने को तो शशिधर हो, तेज पुंज रवि से बढ़कर हो।
नाम तुम्हारा जग में सांचा, ध्यावत भागत भूत पिशाचा।।

राक्षस भूत प्रेत सब भागें, सुमरत भय कभी न लागे।
कीर्ति तुम्हारी हैं अति भारी, गुण गाते नित नर और नारी।
जिस पर होती कृपा तुम्हारी, संकट झट कटता हैं भारी।
जो भी जैसी आश लगाता, पूरी उसे तुरत कर पाता।।

दुखिया दर पर जो आते हैं संकट सब खोकर जाते हैं।
खुला सभी को प्रभू द्वार हैं, चमत्कार को नमस्कार हैं।।
अन्धा भी यदि ध्यान लगावे, उसके नेत्र शीघ्र खुल जावे।
बहरा भी सुनने लग जावे, गहले का पागलपन जावे।।

अखण्डज्योति का घृत जो लगावे,संकट उसका सब कट जावे।
चरणों की रज अति सुखकारी, दुख दरिद्र सब नाशनहारी।।
चालीसा जो मन से ध्यावे, पुत्र पौत्र सब सम्पति पावे।
पार करो दुखियों की नैया, स्वामी तुम बिन नहीं खिवैया।।

प्रभु मैं तुमसे कछु नहिं चाहूं, दर्श तिहारा निशदिन पाऊं।
करूं वन्दना आपकी, श्री चन्द्र प्रभु जिनराज।
जंगल में मंगल कियो, रखौ 'सुरेश' की लाज।।